साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 29, जनवरी(द्वितीय), 2018

मौन के आवरण

आलोक यादव

मौन के ये आवरण मुझको बचा ले जाएंगे
वरना बातों के कई मतलब निकाले जाएंगे

राजनैतिक व्याकरण तुम सीख लो पहले ज़रा
वरना फिर अख़बार में फ़िक़रे उछाले जाएंगे

जानते हैं रहनुमा देंगे हमे कैसा जवाब
आज के सारे मसाइल कल पे टाले जाएंगे

अब अँधेरों की हुकूमत हो चली है हर तरफ़
अब अँधेरों की अदालत में उजाले जाएंगे

शहर से हाकिम के हरकारे हैं आए गाँव में
जाने किसके छीनकर मुँह के निवाले जाएंगे

कब तलक भरते रहें दम दोस्ती का आपकी
आस्तीनों में न हमसे साँप पाले जाएंगे

दर्दे-दिल जो मौत से पहले गया तो दर्द क्या
तेरी थाती को हमेशा हम सँभाले जाएंगे

प्यार का दोनों पे आख़िर जुर्म साबित हो गया
ये फ़रिश्ते आज जन्नत से निकाले जाएंगे

अश्क ज़ाया हो न पाएं सौंप दो तुम सब हमें
दिल है अपना सीप सा मोती बना ले जाएंगे

तुम अगर हो दीप तो 'आलोक' लासानी हैं हम
हम तुम्हारे बाद भी महफ़िल सजा ले जाएंगे

प्रकाशित - कादिम्बनी (मासिक) जुलाई 2015